The

ACHIEVERS IAS ACADEMY

मुहर्रम

www.achieversiaspatna.co.in achieversiaspatna@gmail.com

मुहर्रम

मुहर्रम हिजरी संवत का प्रथम माह है।

मुहर्रम हिजरी संवत का प्रथम माह है। मोहर्रम की 10 तारीख को हजरत इमाम हुसैन शहीद हुए थे। सभी दिनों में आशूरा का दिन यानी मुहर्रम का 10वां दिन शिया व सुन्नी मुसलमानों के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। यह कर्बला के शहीदों की शहादत को सलाम करने का दिन है। इमारत शरिया फुलवारीशरीफ के कार्यवाहकनाजिम मौलाना शिबली ने कहते हैं कि इस माह की अहमियत और फजीलत सैकड़ों वर्ष पहले से है। इस्लाम के पैगंबर हजरत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नवासे हजरत इमाम हुसैन रजी अलेहे और खानदान वाले की शहादत का वाकया 10 मोहर्रम को कर्बला के मैदान में पेश आया। इमाम हुसैन ने नफा-नुकसान से ऊपर उठकर सिर्फ और सिर्फ सच्चाई, इंसाफ और हक के लिए अपनी जान का कीमतीनजराना देख कर दुनिया केइंसानों को यह सबक दिया कि बुराइयों, बेईमानी, तानाशाही को हरगिज कबूल ना करो। चाहे अंजाम अपने और अपने परिवार को कुर्बानी देने की शक्ल में हो। हजरत इमाम हुसैन ने कर्बला के मैदान में भी अल्लाह की इबादत की और सजदे के हालात में शहीद किए गए। कर्बला का मैदान और हजरत इमाम हुसैन की शहादत हमें सीख देती है कि हर हाल में अल्लाह के सामने सिर झुकाएं।

10 मोहर्रम का वाकया

हजरत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जिस साल मक्का छोड़कर मदीना आ गए, उसी हिजरी वाकये की याद में हिजरी कैलेंडर की शुरुआत हुई। इसे हिजरी या इस्लामिक कैलेंडर कहते हैं। इसका पहला माह मुहर्रम है। हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के 60 वर्षों के बाद हजरत इमाम हुसैन को 10वीं मुहर्रम को कर्बला के मैदान में यजीद के फौजियों ने शहीद किया था।

हुसैन का बड़ा मर्तबा था

हजरत हुसैन दीनदार थे। ईमानदार थे। बड़े आलिम थे। उनका बड़ा मर्तबा था। हुजूर सल्लल्लाहो वसल्लम पहले ही कह दिए थे कि हजरत इमाम हुसैन शहीद किए जाएंगे। यह भी फरमाया था कि जन्नत में जो लोग जाएंगे,उनके सरदार हजरत इमाम हुसैन होंगे। उनकी जिंदगी बहुत पाकीजा थी। बहुत सादा जिंदगी गुजारते थे। मामूली खाना खाते थे और मामूली तरीके से रहते थे। नौजवानों को इस पर अमल करना चाहिए

तैमूर लंग ने की थी ताजिया की शुरुआत

भारत में ताजियादारी की शुरुआत बरसों पहले तैमूर लंग बादशाह ने की थी। सन 1336 को समरकंद के नजदीक केश गांव ट्रांस ऑक्सानिया (अब उज्बेकिस्तान) में जन्मे तैमूर को चंगेज खां के पुत्र चुगताई ने प्रशिक्षण दिया। सिर्फ 13 वर्ष की उम्र में ही वह चुगताई तुकों का सरदार बन गया। कहा जाता है कि कुछ कलाकारों ने बांस की किमचियों की मदद से 'कब्र ' या इमाम हुसैन की यादगार का ढांचा तैयार किया। इसे तरह-तरह के फूलों से सजाया गया। इसी को ताजिया नाम दिया गया। इस ताजिए को पहली बार 801 हिजरी में तैमूर लंग के महल परिसर में रखा गया। बता दें कि हजरत इमाम हुसैन के 18 आदमी खानदान के शहीद हुए थे और 71 आदमी दूसरे साथ में थे। उन्हें भी शहीद कर दिया गया। 10वीं मुहर्रम में शिया समुदाय और दूसरे लोग भी हजरत इमाम हुसैन की याद में मातमकरते हैं।